26 सूरए अश शुअरा

आयत 1 से 5 का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 1 का अनुवाद:
"ता सीन मीम"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत केवल कुछ अक्षरों का उल्लेख है, जो प्रतीकात्मक हैं और जिनका विशेष अर्थ है।

प्रमेय (Object of Knowledge):
यह आयत किसी वस्तु या विचार के प्रमेय (Object of Knowledge) के रूप में नहीं प्रस्तुत की जा सकती, क्योंकि यह केवल प्रतीकात्मक रूप में दिए गए अक्षरों का समूह है, जिनका विशिष्ट अर्थ या उद्देश्य स्पष्ट नहीं है। न्याय दर्शन के अनुसार, प्रमेय वह है जिसे अनुभव या तर्क के माध्यम से जाना जा सके, लेकिन इन अक्षरों का तात्त्विक या व्यावहारिक अर्थ नहीं दिया गया है।

उदाहरण (Example):
हिंदू धर्म में भी कुछ मंत्रों और श्लोकों के प्रारंभ में विशेष अक्षरों का प्रयोग होता है, जिनका केवल प्रतीकात्मक या रहस्यमय अर्थ होता है, जैसे "ॐ" का प्रयोग। हालांकि, इनका तात्त्विक या अनुभवजन्य आधार नहीं होता, बल्कि ये मानसिक और ध्यानात्मक सिद्धांतों से संबंधित होते हैं।

निगमन (Conclusion):
यह आयत प्रमेय (Object of Knowledge) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कोई स्पष्ट तात्त्विक या व्यावहारिक जानकारी नहीं दी गई है।

आयत 2 का अनुवाद:
"ये वाज़ेए व रौशन किताब की आयतें हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह कहती है कि यह किताब की आयतें स्पष्ट और वाजिब हैं।

प्रमाण (Pramana):
यह आयत प्रमाण के रूप में प्रस्तुत की गई है, जिसमें यह कहा गया है कि ये आयतें स्पष्ट और सही हैं। न्याय दर्शन में प्रमाण वह तत्व है, जो किसी विचार या सिद्धांत की सत्यता को प्रमाणित करता है। इस आयत में, किताब को प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया गया है, लेकिन इसे केवल विश्वास और धार्मिक दृष्टिकोण से स्वीकार किया जा सकता है। इसे तात्त्विक दृष्टिकोण से स्पष्ट किया जा सकता था।

उदाहरण (Example):
हिंदू धर्म में भी शास्त्रों को प्रमाण माना गया है, जैसे वेदों और भगवद गीता को। गीता में भगवान श्री कृष्ण ने बताया है कि शास्त्रों के माध्यम से सत्य की प्राप्ति होती है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत प्रमाण (Pramana) **के सिद्धांत से मेल खाती है, लेकिन इसे तात्त्विक और अनुभवजन्य दृष्टिकोण से और स्पष्ट किया जा सकता था।**

आयत 3 का अनुवाद:
"(ऐ रसूल) शायद तुम (इस फिक्र में) अपनी जान हलाक कर डालोगे कि ये (कुफ्फार) मोमिन क्यों नहीं हो जाते।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):

यह आयत यह कहती है कि रसूल को चिंता होती है कि क्यों काफिर मोमिन नहीं बनते हैं, और यह चिंता उन्हें अपनी जान को संकट में डालने की स्थिति में ला देती है।

हेतु (Reason):

यह आयत यह कारण (हेतु) बताती है कि काफिरों के मोमिन न बनने पर रसूल को चिंता होती है, जो उन्हें शारीरिक और मानसिक रूप से प्रभावित करती है। न्याय दर्शन में, कारण का तात्त्विक और व्यावहारिक आधार होना चाहिए। हालांकि, यह आयत केवल एक भावनात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जो केवल विश्वास पर आधारित है, इसे और अधिक तात्त्विक रूप से स्पष्ट किया जा सकता था।

उदाहरण (Example):

हिंदू धर्म में भी, जब लोग धर्म के मार्ग पर नहीं चलते, तो गुरु या साधु चिंता व्यक्त करते हैं कि लोग धर्म के सच्चे मार्ग पर क्यों नहीं आते। यह एक भावनात्मक प्रतिक्रिया है, जो विश्वास और आस्था से जुड़ी होती है।

निगमन (Conclusion):

यह आयत हेत (Reason) **के सिद्धांत से मेल खाती, लेकिन इसमें तात्त्विक आधार की कमी है। यह केवल भावनात्मक कारण प्रदान करती है।**

आयत 4 का अनुवाद:

"अगर हम चाहें तो उन लोगों पर आसमान से कोई ऐसा मौजिज़ा नाज़िल करें कि उन लोगों की गर्दनें उसके सामने झुक जाएं।"

चुना गया न्याय तत्व:

व्यापति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):

यह आयत यह बताती है कि यदि भगवान चाहे, तो वह एक चमत्कारी घटना को घटित कर सकता है, जिससे लोग उनके सामने झुक जाएं।

व्यापति (Invariable Concomitance):

यह आयत यह संकेत देती है कि यदि कुछ विशेष घटित होता है (चमत्कार), तो लोग उसके सामने झुक जाएंगे। यह एक प्रकार की निश्चित घटना (व्यापति) को प्रस्तुत करती है, जहां चमत्कारी घटना और लोगों का झुकना हमेशा साथ-साथ होते हैं। न्याय दर्शन में, कोई घटना जब हमेशा एक साथ घटती है, तो उसे "व्यापति" कहा जाता है। हालांकि, चमत्कारी घटनाएं अनुभवजन्य रूप से सिद्ध नहीं की जा सकतीं, जिससे यह आयत व्यावहारिक और तात्त्विक दृष्टिकोण से चुनौतीपूर्ण हो सकती है।

उदाहरण (Example):

हिंदू धर्म में भी कई स्थानों पर यह माना जाता है कि भगवान की कृपा से चमत्कारी घटनाएँ घटित होती हैं, जैसे भगवान का प्रकट होना या आश्चर्यजनक घटनाएँ, जो विश्वास और धर्म के पक्ष में होती हैं।

निगमन (Conclusion):

यह आयत व्याप्ति (Invariable Concomitance) **के सिद्धांत से मेल खाती है, लेकिन इसका तात्त्विक और अनुभवजन्य प्रमाण उपलब्ध नहीं है।**

आयत 5 का अनुवाद:

"और (लोगों का क़ायदा है कि) जब उनके पास कोई नसीहत की बात ख़ुदा की तरफ़ से आयी तो ये लोग उससे मुँह फेरे बग़ैर नहीं रहे।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):

यह आयत यह कहती है कि लोग जब भी उन्हें ख़ुदा की ओर से कोई नसीहत मिलती है, तो वे उससे मुँह फेर लेते हैं और उसे स्वीकार नहीं करते हैं।

प्रमेय (Object of Knowledge):

यह आयत "नसीहत" को प्रमेय (object of knowledge) **के रूप में प्रस्तुत करती है, जो एक सलाह या उपदेश के रूप में है। न्याय दर्शन में प्रमेय का विश्लेषण तात्त्विक दृष्टिकोण से किया जाता है। इस आयत में नसीहत को एक प्रकार की उपदेश के रूप में प्रस्तुत किया गया है, लेकिन इसे तात्त्विक दृष्टिकोण से और स्पष्ट किया जा सकता था।**

उदाहरण (Example):
हिंदू धर्म में भी उपदेश और नसीहत का महत्व है, जैसे गीता में भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को उपदेश दिया। यहाँ पर उपदेश को प्रमेय के रूप में लिया गया, लेकिन इसे तात्त्विक दृष्टिकोण से और स्पष्ट किया जा सकता था।

निगमन (Conclusion):
यह आयत प्रमेय (Object of Knowledge) के सिद्धांत से मेल खाती, लेकिन इसमें तात्त्विक दृष्टिकोण की कमी है, और इसे और अधिक स्पष्ट किया जा सकता था।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
1	प्रमेय (Object of Knowledge)	आयत प्रतीकात्मक अक्षरों का समूह है, जिसका कोई तात्त्विक अर्थ नहीं है।
2	प्रमाण (Pramana)	आयत को प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया गया है, लेकिन इसे तात्त्विक और अनुभवजन्य दृष्टिकोण से और स्पष्ट किया जा सकता था।
3	हेत (Reason)	आयत भावनात्मक कारण प्रस्तुत करती है, लेकिन इसमें तात्त्विक आधार की कमी है।
4	व्याप्ति (Invariable Concomitance)	चमत्कारी घटना और लोगों का झुकना हमेशा साथ-साथ घटता है, लेकिन इसका तात्त्विक प्रमाण नहीं दिया गया है।
5	प्रमेय (Object of Knowledge)	नसीहत को प्रमेय के रूप में प्रस्तुत किया गया है, लेकिन इसे तात्त्विक दृष्टिकोण से और स्पष्ट किया जा सकता था।

निष्कर्ष:
इन आयतों में धार्मिक विश्वास और प्रतीकात्मक विचार प्रस्तुत किए गए हैं, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों के

अनुसार तात्त्विक और अनुभवजन्य दृष्टिकोण से और स्पष्ट किए जा सकते थे, जिससे उनकी सार्वभौमिक स्वीकृति बढ़ती।

आयत 6 से 10 का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 6 का अनुवाद:
"उन लोगों ने झुठलाया ज़रूर तो अनक़रीब ही (उन्हें) इस (अज़ाब) की हक़ीकत मालूम हो जाएगी जिसकी ये लोग हँसी उड़ाया करते थे।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्यापति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह कहती है कि जो लोग अल्लाह के अज़ाब का मजाक उड़ाते हैं, वे अंततः उसका सामना करेंगे।

व्यापति (Invariable Concomitance):
यह आयत यह दावा करती है कि अज़ाब का सामना करने का एक निश्चित परिणाम है। "अज़ाब" और "झूठलाने" के बीच एक निश्चित संबंध स्थापित किया गया है, जैसा कि हर बार झूठलाने पर अज़ाब आता है। यह तात्त्विक दृष्टिकोण से व्याप्ति का उदाहरण है, लेकिन इसे प्रमाणित करने के लिए व्यावहारिक और अनुभवजन्य आधार की आवश्यकता होती है।

उदाहरण (Example):
हिंदू धर्म में भी विश्वास है कि यदि कोई व्यक्ति अपने कर्मों का उल्लंघन करता है, तो उसे कर्मों का फल भुगतना पड़ता है। गीता में श्री कृष्ण ने बताया है कि हर कर्म का फल निश्चित होता है। हालांकि, यह भी विश्वास और धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है और तात्त्विक रूप से सिद्ध नहीं किया जा सकता।

निगमन (Conclusion):
यह आयत व्याप्ति (Invariable Concomitance) के सिद्धांत से मेल खाती है, लेकिन यह केवल विश्वास पर आधारित है और इसका अनुभवजन्य प्रमाण नहीं है।

आयत 7 का अनुवाद:
"क्या इन लोगों ने ज़मीन की तरफ़ भी (ग़ौर से) नहीं देखा कि हमने हर रंग की उम्दा उम्दा चीज़ें उसमें किस कसरत से उगायी हैं?"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह कहती है कि लोग यदि ज़मीन की ओर ध्यान दें, तो वे देख सकते हैं कि ख़ुदा ने उसमें कितनी उम्दा चीज़ें उगायी हैं।

प्रमाण (Pramana):
यह आयत प्रमाण के रूप में प्राकृतिक घटनाओं को प्रस्तुत करती है और यह दावा करती है कि यदि लोग प्राकृतिक दुनिया में ध्यान दें, तो उन्हें ख़ुदा की कुदरत की स्पष्ट निशानियाँ मिल जाएँगी। यह प्रमाण का एक प्रकार हो सकता है, लेकिन इसे अधिक स्पष्ट और व्यावहारिक रूप से सिद्ध करने की आवश्यकता होती है। इसके लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अध्ययन किया जा सकता है, जैसे कि जैविक विविधता और प्रकृति का संतुलन, जो कहीं न कहीं तात्त्विक दृष्टिकोण से संकेतित कर सकते हैं।

उदाहरण (Example):
हिंदू धर्म में भी यह माना जाता है कि प्रकृति के प्रत्येक तत्व में भगवान की दिव्य शक्ति का संकेत मिलता है। वेदों में प्रकृति के विभिन्न रूपों को देवता के रूप में पूजा जाता है, जो यह दर्शाता है कि प्रकृति में भगवान की कुदरत को पहचानने की आवश्यकता है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत प्रमाण (Pramana) के सिद्धांत से मेल खाती है, लेकिन इसका प्रमाण अधिक अनुभवजन्य और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विस्तृत किया जा सकता है।

आयत 8 का अनुवाद:
"यक़ीनन इसमें (भी कुदरत) ख़ुदा की एक बड़ी निशानी है मगर उनमें से अक्सर इमान लाने वाले ही नहीं।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह कहती है कि ज़मीन में हर चीज़ में ख़ुदा की कुदरत की निशानियाँ हैं, लेकिन बहुत कम लोग उन निशानियों पर विश्वास करते हैं।

प्रमेय (Object of Knowledge):
यह आयत कुदरत की निशानियों को प्रमेय के रूप में प्रस्तुत करती है। यह प्रमेय समझने के लिए यह आवश्यक है कि ज़मीन में जो कुछ भी उगता है, वह भगवान की कुदरत का प्रतीक है। न्याय दर्शन में प्रमेय वह होता है जिसे प्रमाण के माध्यम से समझा या देखा जा सकता है, लेकिन कुदरत की निशानियाँ केवल विश्वास पर आधारित हैं और इसे तात्त्विक दृष्टिकोण से और स्पष्ट किया जा सकता था।

उदाहरण (Example):
हिंदू धर्म में कुदरत को भगवान की माया के रूप में देखा जाता है। प्रकृति में जीवन और विविधता भगवान की कुदरत का प्रतीक मानी जाती है, जिसे केवल आस्थावान व्यक्ति ही समझ सकते हैं।

निगमन (Conclusion):
यह आयत प्रमेय (Object of Knowledge) के सिद्धांत से मेल खाती है, लेकिन इसे और स्पष्ट किया जा सकता था। कुदरत की निशानियों को केवल विश्वास और आस्था के माध्यम से स्वीकार किया जा सकता है।

आयत 9 का अनुवाद:
"और इसमें शक नहीं कि तेरा परवरदिगार यक़ीनन (हर चीज़ पर) ग़ालिब (और) मेहरबान है।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):

यह आयत यह कहती है कि भगवान हर चीज़ पर क़ाबू रखते हैं और वह अत्यंत मेहरबान हैं।

हेतु (Reason):

यह आयत कारण (हेतु) प्रस्तुत करती है कि भगवान की कुदरत और मेहरबानी का अनुभव संसार में हर चीज़ पर है। यह भी एक कारण है जो लोगों को ईश्वर के अस्तित्व और उसकी महिमा को स्वीकारने के लिए प्रेरित करता है। हालांकि, यह कारण केवल विश्वास पर आधारित है और तात्त्विक दृष्टिकोण से और स्पष्ट किया जा सकता था।

उदाहरण (Example):

हिंदू धर्म में भगवान के विभिन्न रूपों का सम्मान किया जाता है, जैसे भगवान श्री कृष्ण या शिव जी की महिमा। वे दुनिया की हर चीज़ पर क़ाबू रखते हैं, लेकिन यह भी विश्वास पर आधारित है, जो तात्त्विक दृष्टिकोण से और अधिक स्पष्ट किया जा सकता था।

निगमन (Conclusion):

यह आयत हेत (Reason) के सिद्धांत से मेल खाती, लेकिन इसमें और अधिक तात्त्विक स्पष्टता की आवश्यकता है।

आयत 10 का अनुवाद:

"(ऐ रसूल वह वक़्त याद करो) जब तुम्हारे परवरदिगार ने मूसा को आवाज़ दी कि (इन) ज़ालिमों फ़िरऔनियों की क़ौम के पास जाओ (हिदायत करो)।"

चुना गया न्याय तत्व:

उदाहरण (Example)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):

यह आयत यह कहती है कि भगवान ने मूसा को फ़िरऔन और उसकी क़ौम के पास भेजा ताकि उन्हें हिदायत दी जाए।

उदाहरण (Example):
यह आयत उदाहरण के रूप में मूसा और फ़िरऔन की क़ौम का उल्लेख करती है, जो एक ऐतिहासिक घटना को दर्शाता है। यह एक उदाहरण प्रस्तुत करता है कि कैसे ईश्वर ने एक पैगंबर को उन लोगों के पास भेजा जो ज़ालिम थे। यह न्याय दर्शन में उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है, जो स्पष्ट रूप से धार्मिक दृष्टिकोण से सही है, लेकिन इसका तात्त्विक दृष्टिकोण में और अधिक विस्तार किया जा सकता है।

उदाहरण (Example):
हिंदू धर्म में भी भगवान ने विभिन्न अवतारों में आकर लोगों को हिदायत दी है, जैसे श्री कृष्ण ने अर्जुन को गीता के उपदेश दिए। यह एक उदाहरण है जो सिद्धांतों को स्पष्ट करता है, लेकिन इसे केवल विश्वास और आस्था से जोड़ा गया है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत उदाहरण (Example) के सिद्धांत से मेल खाती, लेकिन इसका तात्त्विक विश्लेषण और विस्तार किया जा सकता था।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
6	**व्याप्ति (Invariable Concomitance)**	**आयत अज़ाब और झूठलाने के बीच निश्चित संबंध प्रस्तुत करती है, लेकिन इसका अनुभवजन्य प्रमाण उपलब्ध नहीं है।**
7	**प्रमाण (Pramana)**	**यह आयत प्राकृतिक घटनाओं को प्रमाण के रूप में प्रस्तुत करती है, लेकिन इसका वैज्ञानिक दृष्टिकोण से और अधिक स्पष्ट किया जा सकता है।**
8	**प्रमेय (Object of Knowledge)**	**कुदरत की निशानियों को प्रमेय के रूप में प्रस्तुत किया गया है, लेकिन इसे तात्त्विक दृष्टिकोण से और स्पष्ट किया जा सकता था।**
9	**हेत (Reason)**	**यह आयत केवल विश्वास पर आधारित कारण प्रस्तुत करती है, जो तात्त्विक दृष्टिकोण से और स्पष्ट किया जा सकता था।**

10	उदाहरण (Example)	यह आयत एक ऐतिहासिक उदाहरण प्रस्तुत करती है, लेकिन इसका तात्त्विक विस्तार किया जा सकता था।

निष्कर्ष:
इन आयतों में धार्मिक विश्वास और प्रतीकात्मक विचार प्रस्तुत किए गए हैं, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार तात्त्विक और अनुभवजन्य दृष्टिकोण से और स्पष्ट किए जा सकते थे, जिससे उनकी सार्वभौमिक स्वीकृति बढ़ती।

आयत 11 से 15 का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 11 का अनुवाद:
"क्या ये लोग (मेरे ग़ज़ब से) डरते नहीं हैं?"

चुना गया न्याय तत्व:
व्यापति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह प्रश्न करती है कि क्या लोग ख़ुदा के ग़ज़ब से नहीं डरते हैं।

व्यापति (Invariable Concomitance):
यह आयत यह दर्शाती है कि ग़ज़ब और डर के बीच एक निश्चित संबंध होना चाहिए, यानी जो लोग ख़ुदा के ग़ज़ब से अवगत होते हैं, वे डरते हैं। यह तात्त्विक दृष्टिकोण से एक निश्चित संबंध प्रस्तुत करती है, लेकिन इसे वास्तविकता में सिद्ध करना मुश्किल हो सकता है क्योंकि हर व्यक्ति का डर और प्रतिक्रिया अलग होती है।

उदाहरण (Example):
हिंदू धर्म में भी यह माना जाता है कि जो लोग भगवान के क्रोध को समझते हैं, वे पाप से बचने के लिए डरते हैं। गीता में श्री कृष्ण ने अर्जुन को बताया है कि जो व्यक्ति भगवान के आदेशों का उल्लंघन करता है, उसे दंड मिलता है। लेकिन फिर भी, यह विश्वास और आस्था का विषय है, न कि तात्त्विक प्रमाण।

निगमन (Conclusion):

यह आयत व्याप्ति (Invariable Concomitance) का उदाहरण प्रस्तुत करती है, लेकिन इसका अनुभवजन्य प्रमाण नहीं है और यह विश्वास पर आधारित है।

आयत 12 का अनुवाद:

"मूसा ने अर्ज़ कि परवरदिगार, मैं डरता हूँ कि (मुबादा) वह लोग मुझे झुठला दे।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):

मूसा ने ख़ुदा से यह कहकर अपने डर को व्यक्त किया कि लोग उसे झुठलाने की संभावना रखते हैं।

प्रमाण (Pramana):

यह आयत मूसा के डर को प्रमाण के रूप में प्रस्तुत करती है, जिसमें वह अपनी चिंता व्यक्त कर रहे हैं कि उनकी बातों को लोग झूठा मान सकते हैं। यह प्रमाण (Pramana) के सिद्धांत को मान्यता देती है, क्योंकि मूसा अपनी स्थिति को सच मानते हुए इसे ईश्वर से साझा करते हैं। हालांकि, इस प्रमाण को तात्त्विक रूप से सत्यापित करना संभव नहीं है, क्योंकि यह व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित है।

उदाहरण (Example):

हिंदू धर्म में भी राक्षसों और असुरों के विरोध में देवताओं का संघर्ष होता है, जैसे कि भगवान श्री कृष्ण ने दुर्योधन और कौरवों से संघर्ष किया। इन संघर्षों में भी प्रमाण होता है कि सत्य और धर्म का पालन करने वाले को असत्य और अधर्म से डरने की आवश्यकता नहीं होती।

निगमन (Conclusion):

यह आयत प्रमाण (Pramana) का उदाहरण है, लेकिन इसे केवल व्यक्तिगत अनुभव के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो तात्त्विक दृष्टिकोण से सीमित है।

आयत 13 का अनुवाद:
"और (उनके झुठलाने से) मेरा दम रुक जाए और मेरी ज़बान (अच्छी तरह) न चले तो हारुन के पास पैग़ाम भेज दे (कि मेरा साथ दे)।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
मूसा ने कहा कि यदि लोग उसे झुठलाते हैं, तो उसका दम रुक सकता है और उसकी ज़बान नहीं चलेगी, इसलिए उसने हारुन से सहायता माँगी।

हेतु (Reason):
यह आयत कारण (हेतु) प्रस्तुत करती है कि यदि उसे झुठलाया गया तो वह डरता है कि उसकी शक्ति और प्रभाव खत्म हो जाएगा। इसके परिणामस्वरूप, वह हारुन से सहायता चाहता है। यह तात्त्विक दृष्टिकोण से एक कारण दिखाता है, लेकिन इसे सिद्ध करने के लिए अधिक गहरे प्रमाण की आवश्यकता होती है कि मूसा के साथ क्या वास्तविक घटनाएँ घटीं।

उदाहरण (Example):
हिंदू धर्म में भी भगवान के अवतारों ने मानवता के कल्याण के लिए सहायता ली है। जैसे कि भगवान राम ने रावण से युद्ध के लिए अपने भाई लक्ष्मण से सहायता ली। यह एक कारण के रूप में प्रस्तुत किया गया कि जब किसी को सहायता की आवश्यकता हो, तो वह दूसरों से मदद ले सकता है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत हेत (Reason) का उदाहरण प्रस्तुत करती है, लेकिन इसमें व्यक्ति की चिंता और आशंका को ध्यान में रखा गया है, जो अनुभवजन्य सत्यापित नहीं हो सकता है।

आयत 14 का अनुवाद:
"(और इसके अलावा) उनका मेरे सर एक जुर्म भी है कि मैने एक शख़्स को मार डाला था।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):

मूसा ने ख़ुद को एक जुर्म का अपराधी माना क्योंकि उसने एक आदमी को मार डाला था।

प्रमेय (Object of Knowledge):

यह आयत प्रमेय के सिद्धांत के तहत मूसा के अपराध को प्रस्तुत करती है, जो उनके दृष्टिकोण से एक दोष था। यह तात्त्विक दृष्टिकोण से प्रमेय के रूप में प्रस्तुत किया गया है, लेकिन यह प्रमेय केवल विश्वास पर आधारित है, क्योंकि यह केवल मूसा की दृष्टि से सही है और किसी अन्य दृष्टिकोण से इसे सही या गलत के रूप में सिद्ध नहीं किया जा सकता है।

उदाहरण (Example):

हिंदू धर्म में भी कर्मों के परिणामों को प्रमेय के रूप में प्रस्तुत किया गया है। जैसे कि गीता में श्री कृष्ण ने कहा है कि हर व्यक्ति को अपने कर्मों का फल प्राप्त होता है, चाहे वह अच्छा हो या बुरा। यह प्रमेय कर्म के सिद्धांत को सिद्ध करता है, लेकिन तात्त्विक प्रमाण इसे पूरी तरह सिद्ध नहीं करते हैं।

निगमन (Conclusion):

यह आयत प्रमेय (Object of Knowledge) **के सिद्धांत से मेल खाती है, लेकिन इसे अनुभवजन्य और तात्त्विक दृष्टिकोण से विस्तृत किया जा सकता था।**

आयत 15 का अनुवाद:

"तो मैं डरता हूँ कि (शायद) **मुझे ये लोग मार डालें ख़ुदा ने कहा हरगिज़ नहीं अच्छा तुम दोनों हमारी निशानियाँ लेकर जाओ हम तुम्हारे साथ हैं।"**

चुना गया न्याय तत्व:

उदाहरण (Example)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):

यह आयत मूसा के डर का समाधान प्रस्तुत करती है, जिसमें ख़ुदा ने कहा कि वह उनके साथ है और उन्हें डरने की आवश्यकता नहीं है।

उदाहरण (Example):
यह आयत एक उदाहरण प्रस्तुत करती है कि जब किसी व्यक्ति को किसी संकट का सामना करना पड़ता है, तो ईश्वर उसकी मदद करता है और उसे साहस प्रदान करता है। यह एक ऐतिहासिक उदाहरण को दर्शाता है जो धार्मिक विश्वास पर आधारित है।

उदाहरण (Example):
हिंदू धर्म में भी भगवान अपने भक्तों की रक्षा करते हैं, जैसे कि भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को महाभारत के युद्ध में मार्गदर्शन दिया और उसे साहस दिया। यह उदाहरण दर्शाता है कि ईश्वर हमेशा अपने भक्तों के साथ होता है, लेकिन इसे भी तात्त्विक दृष्टिकोण से और विस्तृत किया जा सकता है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत उदाहरण (Example) के सिद्धांत से मेल खाती, लेकिन इसका तात्त्विक विस्तार किया जा सकता था।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
11	व्याप्ति (Invariable Concomitance)	ग़ज़ब और डर के बीच निश्चित संबंध प्रस्तुत किया गया है, लेकिन इसका अनुभवजन्य प्रमाण नहीं है।
12	प्रमाण (Pramana)	यह आयत मूसा के डर को प्रमाण के रूप में प्रस्तुत करती है, लेकिन यह केवल व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित है।
13	हेत (Reason)	मूसा का डर और हारुन से मदद माँगने का कारण स्पष्ट किया गया है, लेकिन इसका तात्त्विक प्रमाण उपलब्ध नहीं है।
14	प्रमेय (Object of Knowledge)	मूसा के जुर्म को प्रमेय के रूप में प्रस्तुत किया गया है, लेकिन इसे अनुभवजन्य दृष्टिकोण से सिद्ध नहीं किया जा सकता।
15	उदाहरण (Example)	यह आयत उदाहरण प्रस्तुत करती है कि ईश्वर अपने भक्तों की रक्षा करता है, लेकिन इसे और विस्तृत किया जा सकता है।

निष्कर्ष:

इन आयतों में व्यक्ति के डर, ईश्वर के मार्गदर्शन और सहारे के बारे में विश्वास आधारित दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है। न्याय दर्शन में इन विचारों को तात्त्विक और अनुभवजन्य दृष्टिकोण से और स्पष्ट किया जा सकता था, जिससे उनका सार्वभौमिक स्वीकृति बढ़ सकती थी।